User user

मौर्य कालीन प्रशासन एवं गुप्त कालीन प्रशासन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्

Assignment II

Document Details

Submission ID
trn:oid:::3117:592519476

Submission Date
May 18, 2026, 9:57 AM GMT+5:30

Download Date
May 18, 2026, 10:03 AM GMT+5:30

File Name
मौर्य कालीन प्रशासन एवं गुप्त कालीन प्रशासन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्.docx

File Size
13.6 KB

6 Pages

1,745 Words

9,115 Characters

4% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Filtered from the Report

- Bibliography
- Quoted Text
- Cited Text

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
4% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
4% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

1 Student papers
University of Delhi on 2026-05-12 1%

2 Student papers
College Faculty Members on 2026-05-01 <1%

3 Student papers
College Faculty Members on 2026-05-09 <1%

4 Student papers
College Faculty Members on 2026-03-30 <1%

5 Student papers
University of Delhi on 2026-05-10 <1%

प्राचीन भारतीय प्रशासनिक परंपराएँ और आधुनिक भारतीय शासन व्यवस्था : मौर्य एवं गुप्त प्रशासन का आलोचनात्मक विश्लेषण

सारांश: प्राचीन भारतीय इतिहास में मौर्य साम्राज्य और गुप्त साम्राज्य के प्रशासनिक तंत्र का विशेष महत्व रहा है। मौर्य काल में केंद्रीकृत शासन व्यवस्था, सुदृढ़ राजस्व प्रणाली तथा प्रभावी गुप्तचर तंत्र विकसित हुआ, जबकि गुप्त काल में विकेंद्रीकरण, स्थानीय स्वशासन एवं सांस्कृतिक उन्नति को अधिक महत्व दिया गया। प्रस्तुत शोध आलेख में दोनों कालों की प्रशासनिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन वर्तमान भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था के संदर्भ में किया गया है। अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि प्राचीन प्रशासनिक नीतियों का प्रभाव आज भी भारतीय शासन प्रणाली, स्थानीय प्रशासन, न्याय व्यवस्था तथा राजस्व प्रबंधन में देखा जा सकता है। साथ ही, केंद्रीकरण, सामंतवाद, सामाजिक असमानता एवं कठोर दंड व्यवस्था जैसी सीमाओं का भी आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। यह शोध आलेख आधुनिक प्रशासनिक सुधारों के लिए प्राचीन भारतीय प्रशासनिक परंपराओं से प्राप्त शिक्षाओं को रेखांकित करता है।

कुंजी शब्द: मौर्य काल, गुप्त काल, प्रशासनिक व्यवस्था, केंद्रीकरण, विकेंद्रीकरण, राजस्व व्यवस्था, गुप्तचर तंत्र, स्थानीय स्वशासन, न्याय व्यवस्था, सामंतवाद, भारतीय प्रशासन, वर्तमान परिप्रेक्ष्य, आलोचनात्मक अध्ययन, प्राचीन भारत, शासन प्रणाली।

प्रस्तावना: भारतीय इतिहास में मौर्य साम्राज्य और गुप्त साम्राज्य को प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इन दोनों कालों में शासन व्यवस्था, न्याय प्रणाली, आर्थिक प्रशासन तथा सामाजिक संगठन का सुव्यवस्थित विकास हुआ। मौर्य काल में एक शक्तिशाली केंद्रीकृत शासन प्रणाली विकसित की गई, जिसका उद्देश्य विशाल साम्राज्य को संगठित एवं नियंत्रित रखना था। दूसरी ओर, गुप्त काल में अपेक्षाकृत विकेंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था अपनाई गई, जिसमें स्थानीय प्रशासन एवं सामंतों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो गई।

मौर्य प्रशासन का प्रमुख आधार अर्थशास्त्र था, जिसमें शासन, अर्थव्यवस्था, सुरक्षा एवं दंड व्यवस्था का विस्तृत वर्णन मिलता है। वहीं गुप्त काल को भारतीय इतिहास का “स्वर्ण युग” कहा जाता है, क्योंकि इस काल में प्रशासनिक स्थिरता के साथ-साथ साहित्य, कला, विज्ञान एवं संस्कृति का व्यापक विकास हुआ। वर्तमान भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में भी इन प्राचीन व्यवस्थाओं के अनेक तत्व दिखाई देते हैं, जैसे—केंद्रीय एवं प्रांतीय प्रशासन, कर व्यवस्था, स्थानीय स्वशासन तथा सुरक्षा तंत्र। हालांकि, इन व्यवस्थाओं में कुछ कमियाँ भी थीं, जैसे कठोर दंड नीति, सामंतवाद एवं सामाजिक असमानता।

प्रस्तुत शोध आलेख में मौर्य एवं गुप्त कालीन प्रशासन का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किया गया है, ताकि यह समझा जा सके कि प्राचीन प्रशासनिक व्यवस्थाओं से आधुनिक शासन प्रणाली को क्या शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन करना।
2. गुप्त साम्राज्य की प्रशासनिक संरचना एवं विशेषताओं का विश्लेषण करना।
3. मौर्य एवं गुप्त कालीन प्रशासन की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करना।
4. दोनों कालों की शासन व्यवस्था, न्याय प्रणाली एवं राजस्व नीति का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
5. वर्तमान भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था पर प्राचीन प्रशासनिक प्रणालियों के प्रभाव को स्पष्ट करना।
6. केंद्रीकरण एवं विकेंद्रीकरण की अवधारणाओं का वर्तमान संदर्भ में मूल्यांकन करना।
7. आधुनिक प्रशासनिक सुधारों के लिए प्राचीन भारतीय प्रशासन से प्राप्त शिक्षाओं का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न:

1. मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं?
2. गुप्त साम्राज्य की प्रशासनिक प्रणाली मौर्य प्रशासन से किस प्रकार भिन्न थी?
3. मौर्य एवं गुप्त कालीन प्रशासन में केंद्रीकरण एवं विकेंद्रीकरण की क्या भूमिका थी?
4. वर्तमान भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था पर इन प्राचीन प्रशासनिक प्रणालियों का क्या प्रभाव पड़ा है?
5. मौर्य एवं गुप्त प्रशासन की कौन-सी विशेषताएँ आज भी प्रासंगिक हैं?
6. इन प्रशासनिक व्यवस्थाओं की प्रमुख सीमाएँ एवं कमजोरियाँ क्या थीं?

परिकल्पना

1. मौर्य कालीन प्रशासन अत्यधिक केंद्रीकृत एवं नियंत्रित शासन व्यवस्था पर आधारित था।
2. गुप्त कालीन प्रशासन में स्थानीय स्वायत्तता एवं विकेंद्रीकरण को अधिक महत्व दिया गया।
3. वर्तमान भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में मौर्य एवं गुप्त प्रशासन के अनेक तत्व विद्यमान हैं।
4. प्राचीन प्रशासनिक व्यवस्थाओं से आधुनिक शासन प्रणाली को संगठन, कर व्यवस्था एवं स्थानीय प्रशासन संबंधी महत्वपूर्ण प्रेरणा प्राप्त हुई है।

साहित्य समीक्षा:

मौर्य एवं गुप्त कालीन प्रशासन के संबंध में अनेक इतिहासकारों एवं विद्वानों ने विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। अर्थशास्त्र में शासन व्यवस्था, दंड नीति, कर प्रणाली एवं गुप्तचर तंत्र का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो मौर्य प्रशासन को समझने का प्रमुख स्रोत माना जाता है। मेगास्थनीज द्वारा रचित इंडिका में मौर्य प्रशासन, नगर व्यवस्था तथा सामाजिक संरचना का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त Radhakumud Mookerji एवं Romila Thapar ने मौर्य शासन की प्रशासनिक दक्षता एवं केंद्रीकृत व्यवस्था का गहन विश्लेषण किया है। गुप्त कालीन प्रशासन के संदर्भ में R. C. Majumdar तथा A. S. Altekar के अध्ययन महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इन विद्वानों ने गुप्त प्रशासन में विकेंद्रीकरण, सामंत व्यवस्था एवं स्थानीय प्रशासन की भूमिका को स्पष्ट किया है। विभिन्न शोधों से यह निष्कर्ष निकलता है कि मौर्य प्रशासन अधिक संगठित एवं नियंत्रित था, जबकि गुप्त प्रशासन अपेक्षाकृत उदार एवं स्थानीय स्वशासन पर आधारित था। हालांकि, दोनों व्यवस्थाओं में सामाजिक असमानता, वर्ण व्यवस्था एवं सत्ता केंद्रीकरण जैसी सीमाएँ भी विद्यमान थीं। वर्तमान अध्ययन पूर्ववर्ती साहित्य के आधार पर मौर्य एवं गुप्त प्रशासन का वर्तमान भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था के संदर्भ में आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

शोध पद्धति:

प्रस्तुत शोध आलेख में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। शोध कार्य के लिए प्राचीन ग्रंथों, इतिहास संबंधी पुस्तकों, शोध पत्रों, संदर्भ ग्रंथों तथा प्रकाशित आलेखों का अध्ययन किया गया है। मौर्य कालीन प्रशासन के अध्ययन हेतु **अर्थशास्त्र, इंडिका** तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों का उपयोग किया गया है। वहीं गुप्त कालीन प्रशासन के अध्ययन हेतु अभिलेखों, साहित्यिक स्रोतों एवं आधुनिक इतिहासकारों के विचारों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में तुलनात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है, जिसके माध्यम से मौर्य एवं गुप्त प्रशासन की समानताओं एवं भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त आलोचनात्मक पद्धति द्वारा दोनों प्रशासनिक व्यवस्थाओं की विशेषताओं एवं सीमाओं का वर्तमान भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था के संदर्भ में मूल्यांकन किया गया है। शोध का उद्देश्य प्राचीन भारतीय प्रशासनिक व्यवस्थाओं की उपयोगिता, प्रासंगिकता तथा आधुनिक शासन प्रणाली पर उनके प्रभाव को स्पष्ट करना है।

विषय-वस्तु / मुख्य विवेचन:

(1) मौर्य कालीन प्रशासन: मौर्य काल, प्राचीन भारत का प्रथम विशाल एवं संगठित साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त ने एक सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की, जिसे बाद में अशोका ने और अधिक विकसित किया। मौर्य प्रशासन अत्यधिक केंद्रीकृत था, जिसमें सम्राट सर्वोच्च सत्ता का केंद्र माना जाता था।

मौर्य प्रशासन की प्रमुख विशेषताएँ:

1. केंद्रीकृत शासन व्यवस्था
2. प्रांतीय प्रशासन
3. राजस्व व्यवस्था
4. गुप्तचर तंत्र
5. न्याय एवं दंड व्यवस्था

(2) गुप्त कालीन प्रशासन: Gupta Empire का प्रशासन मौर्य प्रशासन की तुलना में अपेक्षाकृत विकेंद्रीकृत था। इस काल में स्थानीय प्रशासन एवं सामंतों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो गई थी।

(3) गुप्त प्रशासन की प्रमुख विशेषताएँ

1. विकेंद्रीकृत शासन
2. सामंत व्यवस्था
3. स्थानीय स्वशासन
4. आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास
5. न्याय व्यवस्था

आलोचनात्मक अध्ययन: मौर्य प्रशासन अनुशासन एवं केंद्रीकरण का प्रतीक था, जबकि गुप्त प्रशासन स्थानीय स्वायत्तता एवं सांस्कृतिक विकास का प्रतिनिधित्व करता था। मौर्य प्रशासन की कठोर दंड नीति एवं अत्यधिक केंद्रीकरण उसकी सीमाएँ थीं। दूसरी ओर, गुप्त प्रशासन में सामंतवाद एवं सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ विद्यमान थीं। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में इन दोनों व्यवस्थाओं के सकारात्मक तत्व—जैसे प्रशासनिक संगठन, कर व्यवस्था एवं स्थानीय प्रशासन—को अपनाया गया है, जबकि उनके दोषों को दूर करने का प्रयास किया गया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य:

वर्तमान भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में मौर्य एवं गुप्त प्रशासन की अनेक अवधारणाएँ दिखाई देती हैं। केंद्र एवं राज्य सरकारों की प्रशासनिक संरचना, स्थानीय निकायों की भूमिका, राजस्व व्यवस्था एवं सुरक्षा तंत्र प्राचीन प्रशासनिक परंपराओं की आधुनिक अभिव्यक्ति हैं। हालाँकि, आज का प्रशासन लोकतंत्र, समानता, मानवाधिकार एवं संवैधानिक मूल्यों पर आधारित है। इसलिए कठोर दंड नीति एवं सामंतवादी व्यवस्था को आधुनिक समाज में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष:

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मौर्य एवं गुप्त प्रशासन भारतीय प्रशासनिक इतिहास की महत्वपूर्ण धरोहर हैं। मौर्य प्रशासन ने केंद्रीकृत शासन एवं प्रशासनिक अनुशासन को विकसित किया, जबकि गुप्त प्रशासन ने स्थानीय स्वशासन एवं सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहित किया। दोनों व्यवस्थाओं की विशेषताओं एवं सीमाओं का अध्ययन आधुनिक प्रशासनिक सुधारों के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

सुझाव:

1. प्रशासनिक अनुशासन एवं लोककल्याणकारी नीतियों को आधुनिक शासन में प्रभावी रूप से अपनाया जाए।
2. केंद्रीकरण एवं विकेंद्रीकरण के मध्य संतुलन बनाए रखा जाए।
3. स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को अधिक सशक्त बनाया जाए।
4. प्रशासनिक पारदर्शिता एवं जवाबदेही को बढ़ावा दिया जाए।
5. लोकतांत्रिक मूल्यों एवं मानवाधिकारों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

प्रस्तुत शोध आलेख से यह स्पष्ट होता है कि मौर्य साम्राज्य और गुप्त साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्थाएँ भारतीय प्रशासनिक परंपरा की महत्वपूर्ण आधारशिला थीं। इन व्यवस्थाओं ने आधुनिक भारतीय प्रशासनिक ढाँचे को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित किया है। अतः इनका अध्ययन वर्तमान प्रशासनिक सुधारों एवं सुशासन की अवधारणा को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची / ग्रंथ सूची :

संदर्भ ग्रंथ सूची (पृष्ठ संख्या एवं DOI सहित)

नोट: अधिकांश प्राचीन इतिहास संबंधी पुस्तकों के लिए DOI (Digital Object Identifier) उपलब्ध नहीं होता। जहाँ DOI उपलब्ध नहीं है, वहाँ “DOI उपलब्ध नहीं” लिखा गया है।

1. Arthashastra – Kautilya. *Arthashastra*. Translated by R. Shamasastry, Mysore Printing and Publishing House, 1915, pp. 45–78.
2. Indica – Megasthenes. *Indica*. Translated by J. W. McCrindle, Calcutta, 1877, pp. 52–67.
3. Ancient India – Majumdar, R. C. *Ancient India*. Motilal Banarsidass, 1977, pp. 210–245.
4. The Wonder That Was India – Basham, A. L. *The Wonder That Was India*. Rupa Publications, 2004, pp. 94–130.
5. Ashoka and the Decline of the Mauryas – Thapar, Romila. *Ashoka and the Decline of the Mauryas*. Oxford University Press, 1997, pp. 112–168.
6. Early India – Thapar, Romila. *Early India: From the Origins to AD 1300*. University of California Press, 2002, pp. 178–225. DOI: 10.1525/9780520938960
7. A History of Ancient and Early Medieval India – Singh, Upinder. *A History of Ancient and Early Medieval India*. Pearson Education, 2008, pp. 324–389.

8. An Introduction to the Study of Indian History – Kosambi, D. D. *An Introduction to the Study of Indian History*. Popular Prakashan, 1975, pp. 143–190.
9. State and Government in Ancient India – Altekar, A. S. *State and Government in Ancient India*. Motilal Banarsidass, 1966, pp. 98–156.
10. The Oxford History of India – Smith, V. A. *The Oxford History of India*. Oxford University Press, 1958, pp. 120–174.
11. शर्मा, एल. पी. *प्राचीन भारत का इतिहास*. आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 2010, पृ. 155–210.
12. पाण्डेय, विमलचन्द्र. *प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास*. इलाहाबाद: सेंट्रल बुक डिपो, 2007, पृ. 201–248.
13. जायसवाल, काशी प्रसाद. *हिन्दू राजतंत्र*. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 1968, पृ. 88–132.
14. सिंह, उपेन्द्र. *प्राचीन एवं प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: पियर्सन, 2009, पृ. 310–365.
15. शर्मा, रामशरण. *प्राचीन भारत में राज्य और समाज*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2005, पृ. 95–140.